REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 5 | FEBRUARY – 2017

भारतीय भाषा के सिनेमा और हाशिए का समाज

(सत्यजीत राय जी की सद्गति(हिन्दी), केतन महेता की भव नी भवाई(गुजराती) और नागराज मंजुले(मराठी) की सैराट के विशेष संदर्भ में)

डॉ. हितेश एन. गांधी,
रत्नसिंहजी महिडा कॉलेज, राजपीपला, जि नर्मदा,गुजरात.

प्रस्तावना :

दलित उत्पीडन भारतीय लोकतंत्र को महान बनने के रस्ते में व्यवधान बना रहता हैं. कोई न कोई प्रदेश में दलितो पें अत्याचार की घटना सामने आती हैं तब राजनैतिक के बयानबाजी बिना कुछ भी नहीं होता .समाज में आज भी दलितों की तस्वीर में कोइ बदलाव नही हैं. हाल ही में हुए दलित उत्पीडन की घटनाओ कें कारण फिर चर्चा होने लगी हैं कि कब परिस्थिति में सुधार आयेगा? अस्पृश्यता के भेदभाव से आगे बढकर दलित बेरहमी से उत्पीडनों का शिकार बन रहे हैं. देश की कोई भी दिशाएँ देखे जैसे उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा तक में अत्याचार की आग फैली हुई हैं. ऐसी दोजख भरी स्थिति जीने वाले दलितो का जीवन भी प्रसिद्ध कलाकारो से अछूता रहा नहीं है. दलितों की वेदना को आलेखित करता आक्रोशपूर्ण साहित्य भी दिखाई तो देता ही हैं. मराठी साहित्य सें जन्मे दलित आंदोलन की असर समग्र भारतीय साहित्य जगत पर दिखाई देती हैं. कविता हों या उपन्यास हो, कहानी हो, जीवनी हो, या फिर नाटक स्वरूप हों साहित्य में दलितों की जीवन व्यथा निरुपित दिखाई देती हैं. साहित्य के मुकाबले भारतीय फिल्मे चाहे दलित आंदोलन के प्रभाव अछूती रही हो फिर भी कई आश्चर्य के बीच, कभी कभी दलित जीवन को दर्शानेवाली फिल्मे भी प्रस्तुत होती रही है. दलित जीवन को वर्णित करने वाली भारतीय फिल्मो का इतिहास में लम्बा करीबन सौ साल का हैं –अछूत कन्या (१९३६) से लेकर सैराट (२०१६)तक है. अंकुर–१९७४, मृगीया–१९७७, आक्रोश–१९८०, पार–१९८४, दामुल–१९८५, लगान–२००१,पीपली लाईव –२०१०, आरक्षण–२०११, मसान–२०१५ भारतीय फिल्मो में निरूपति दलित जीवन की विभिषिका को समझने हिन्दी, गुजराती और मराठी भाषा की फिल्मो को लेकर अभ्यास कीया जा सकता है. गुजराती से केतन महेता की और लेखिका धीरु बहन पटेल के भवाई–नाटक पर आधारित भव नी भवाई (१९८०) हिन्दी से सत्यजीत रायजी की और मुन्सी प्रेमचंद जी कहानी पर आधारित सद्गति (१९८१), और मराठी से नागराज मंजुले की बहुचर्चित रेकर्डब्रेक फिल्म सैराट (२०१६) को केन्द्र में रख कर, यह फिल्मो में दलितो के प्रति अस्पृश्यता की भावना, दलित जीवन की दारुण वास्तविकता, दलित समाज में निहीत अंधश्रध्धा, मान्यताए, बाधाएँ आखडी जैसे का अभ्यास कर सकते हैं.

१९८१ के दौरान दूरदर्शन लिये सर्जित ४५ मिनट की फिल्म सद्गति में सत्यजीत राय ने दलितो की दयनीय कंगाल स्थिति का बखूबी से निरुपण किया हैं. स्व शोषण को नियति मानकर चूपचापबंद मुह बेठकर सहन करता, अन्याय, अपमान, अत्याचार सामने प्रतिकार नही करता, लघुताग्रंथी से पीडीत और वर्णव्यवस्था के कारण खडी हुई जातिवादी समस्या, अत्याचार सहन करते शोषित दलितो का वास्तविक चित्रण इन फिल्मो में दिखाई देता हैं.

फिल्म की शरूआती फर्स्ट फ्रेम में चमार दुखी के घर को कलोझ केमेरा से दृश्यांकित कीया है. खपरैल से बने हुए घर पर फिल्म का टाइटल स्क्रोल होता हैं. शीर्षक से ही दुखीया की आर्थिक बद्हालत का चितार दिया है. दुखी की पत्नी जुरिया दुखी को ढुंढती अपनी बेटी धनीया को पुकारती है. जुरिया दुखी को ढूंढते हुए खेत में आती है. बिमार दुखी चारा काटने गया है. चमार समाज के दुखी को अपनी बेटी की शादी के लिए मुहूर्त निकलवाना है. मुहूर्त निकलवाने के लिए गाँव के पंडित को घर बुलवाने पंडित के घर खाली हाथ तो जा नही सकता इसलिए चार काटने गया है.एक ओर समस्या उन को बिठाने की हैं.दुखिया चमार जाति का दलित होनें से उसकी खटिया पर पंडित बैठ नही शकते.जुरिया ठाकुर के यहाँ से खटिया लाने की सोच रही है, लेकिन दुखिया कहता है "आग तक तो घर से निकलती नही, खटिया देंगे! कै थाने में जाकर एक लोटा पानी मांगू तो न मिले! भला खटिया देगा" पंडित को दक्षिणा भी देना है, लेकिन उसको स्पर्श करने का अधिकार नहिं; 'तूम कुछ मत छूना नही,गजब हो जायेगा'.दुखिया बिमार होने के कारण और;२ ;सुबह से कुछ खाया नही है इस लिये उसकी पत्नी उसे पंडित के घर जाने से रोक रही है. यहाँ हिन्दु धर्म वर्णव्यवस्था जनीत अस्पृश्यता दिखाई देती हैं. सीधा लेने में यह अस्पृश्यता बीच नही हैं. ;दुखी चारा लेकर पंडित के घर जाता है.पंडित जी पूजा में लगे है. तब तक उसको काम सौंप दिया जाता हैं. „थोडा झाडु लेकर ध्वार तो साफ कर दें यह बैठकभी कइ दिन से लीपी नही गइ, उसे भी गोबरसे लीप दे तब तक मैं भोजन कर लू फिर जरा आराम करके चलूगाँ" और थोडी देर बाद और काम दे देते है. खलिहान में चार खांची भूचा पडा है. उसे भी उठा लाना और भुसौली में रख देना' "यह लकडी भी चीर देना" मुहूर्त कढवाने के लिए कितना काम करना पडता है; उपर से सीधा भी तो देना ही है; लकडे की गाँठ फाडते फाडते जाने से बीडी के लिए आग माँगने जाता है तब भी अपमान सहना पडता हैं "चमार हो, धोबी हो पासी हो मुहँ उठाये चले आये, हिन्दु का घर न हुआ कोइ सराय हुई, कह दो दाढीबजार से चला जाय नही तो इस लुआठे से मुह झुलस दूंगी आग माँगने चले हैं" जब भूख लगती है तब भी कुछ खाने नही मिलता. बिमार – भूखा दुखी पसीने से लतपथ है. जब कि पंडित भरपेट खा कर आराम से सो रहे है. थक जाता है फिर भी दुखी लकडे की गाँठ को फाडने का छोडता नही. आखिर लकडे की गांठ बीच से फट जाता है.और दुखी के हाथ से कुहाडी छुट जाती है, चककर खा कर गिर जाता है. भूखा प्यासा थका शरीर जवाब दे ही देता है–दुखी मर जाता है. यह गाँठ प्रतीक बन कर आती है. गाँठ समान दलित को भी मरने –अपमान सहन करने सिवाय कुछ मूल्य मिलता नही, अस्पृश्यता – वर्णव्यवस्था जनीत यह गाँठ तोडने का युगो से प्रयत्न करते आये है. लेकिन भोग लिए बीना कुछ होता नहीं– आज तक यह गाँठ अक्षत रह कर कितने ही दुखीयो का भोग लिये जा रही है. गोंड चमरवास मे जा कर चमारो को दुखी के मुर्दे को उठाने से रोक देता हैं. पंडितवास में दुर्गंद फैलना शरू हो जाती है. तब पंडितजी एक रस्सी निकाल कर उसका फन्दा बनाकर दुखी के मुरदे के पैर में डाला कर फन्दे को डालकर कस देते हैा. पंडितजी रस्सी पकडकर लाश को घसीटकर गाँव के बाहर ले जाते है. वहाँ से आकर तुरंत स्नान कर कर, दुर्गापाठ पढते, गंगाजल छिडककर पवित्र होते है. यहाँ पंडित के हाथ ढसडाई अंतिमक्रिया पाते दुखी सद्गति पाता है यहा व्यंग भी है. ;भव की भवाई (जीन्दगी का खेल) केतन महेता की प्रारंभ फिल्म हैं जिसे समीक्षको ने खुब सराहा है . बेस्ट फिचर फिल्म के लिये नामांकित नरगीश दत्त पुरस्कार भी इसे मिला और २८वे नेशनल फिल्म फेअर अेवोर्ड में बेस्ट प्रोडकशन डीझाईन के लिये नेशनल एवोर्ड भी मिला था. ;फिल्म की शुरूआत हरीजन एक जूथ द्वारा होती हिजरत पर केमेरा हैं. विश्राम के लिए ठहरे यह जूथ मे से वयोवृद्ध मालो भगत राजाचक्रसेन की कथा कहता हैं. राजा चक्र सेन (नसीरउद्दिन शाह)

को संतान की तीव्र इच्छा/कामना है किन्तु उनकी दोनो रानी को संतान नही हो रहा हैं. एक दिन चक्रसेन के दरबार मे दुर्गध आ रही हैं. जांच करने पर मालूम होता हैं कि हरीजन लग्न के कारण छूी पर होने से यह जगा साफ नही हुए. गुस्से होकर वह समन्स भेजता हैं. उस दौरान जासूस आकर जानकारी देता हैं कि लोगो ने राजा के विरुद्ध षडयंत्र रचा हैं.मंत्री की सलाह अनुसार लोगो का ध्यान दूसरी जगह पे खींच ने राजा पडोस के राज्य के साथ युद्ध घोषित करता हैं. राजा की निगाह से बचकर छोटी रानी का मंत्री के साथ प्रेम संबंध–लग्नेतर संबध हैं. राजा युद्ध घोषित करने पूर्व ही पडोस के राजा, चक्रसेन के राज्य पर आक्रमण करने का सोच लेता हैं. चक्रसेन युद्ध जीत लेते हैं. किन्तु उनका सैन्य क्रूरतापूर्ण घायल होता हैं. उस दौरान राजा चक्रसेन को समाचार मिलता है कि उसकी बडी रानी गर्भवती हैं. ;यह समाचार सुनकर ईर्षा से छोटी रानी और उसका प्रेमी–मंत्री राजज्योतिष के साथ मिलकर षडयंत्र रचते हैं. और राजा को कहते हैं कि राजा यह जन्म लेने वाले बच्चे का मुह देखेंगे तो उनकी तुरंत मृत्यु होगी. गभराहट से राजा सैनिको को जन्म होने वाले बच्चे को मारने का हुकम देते है. राजा के हुकम का पालन करने जानेवाले सैनिक को दया आती है, वह जन्मे–छोटे बच्चे को लकडी की पेटी में रखकर नदी में छोड देता हैं. हरिजन मालोभगत (ओमपुरी) को यह पेटी मिलती है. खुद की पत्नी धूली(दीना पाठक) ;३ ;साथ मिलकर छोटे बच्चे–'जीवा' को उछेरते हैं. इस दौरान राजज्योतिष राजा को सूचन करता है, कि राजा को संतान प्राप्ती करनी हो तो 'वावडी' का निर्माण करना होगा, जिससें राजा तैयार होते हैं. ;'वावडी' के निर्माण में कई साल लगते हैं. लेकिन पानी मिलता नही है. जिवो (मोहन गोखले) बनजारण लडकी उजम (स्मीता पाटील) के प्रेम में पडते हैं. राज ज्योतिष अचानक से खोज निकालते है, कि 'जीवो' राजा का ही पुत्र है. और राजा को खबर देता है, कि वावडी में पानी लाना हो तो 'बत्तीस लक्षणा पुरुष' को भोग चढायें और उसके लिए जीवा योग्य पुरुष है, राजा जीवा को पकडने सैनिको को भेजता है, पर जीवा भाग जाता हैं. ;रंगला– (विदुषक– नीमेश देसाइ) सत्य जानता है, और राणी को खबर देने की सोचता हैं. जीवा उजम के साथ मिलकर युक्ति सोचता है, और राजा को कहता है कि अगर राजा उसके राज्य से उसके समाज की अस्पृश्यता दूर करे तो वह आत्मसमर्पण करेंगा, या फिर खुद ही मर जाएगा और राजा उसका बलिदान दे नही सकेंगे. मंत्री के साथ बातचीत करके अनिच्छा से जीवा की माँग स्वीकार करते हैं. बलिदान के दिन, रंगला जेल से भाग निकलता है, और राजा को जाकर कहता है कि जीवा उसका पुत्र हैं, जीसे राजा खुशी खुशी मार डालना चाहता हैं. तब अचानक से वावडी पानी से भरने लगती है ;कहानी अंत की ओर पहुंचती है, तब हरिजनो मे से एक हरिजन खडा होकर वृद्ध को रोकता है, और लडको से जुठा और सुखद अंत न कहने को कहता है. और दूसरा वैकल्पिक और यथार्थ अंत बताता है.दूसरे अंत में रंगला सत्य बताने नही आता, और निर्धारित कार्यक्रम मुताबिक बलिदान विधि होती है. तब भी वावडी में पानी भरता नही. खुद के संतान के मृत्यु को न सेह शकने वाली माता (धूली)मर जाती हैं दूसरी ओर पिता माला राजा को अभिशाप देता है और वावडी में आत्महत्या कर देता है. माला के मृत्यु बाद वावडी पानी से उभर जाती हैं. और राजा तथा मंत्री को डूबा देते है. आखरी सिकवन्स के बीच बीच भारतीय स्वतंत्र के रकितल फूटेज प्रदर्शित किए हैं. ;सैराट (वाइलड– अनरेस्टेइन) भारततीय मराठी भाषा की संगीत प्रधान रंगदर्शी नाटयात्मक फिल्म है. वह नागराज मंजूले द्वारा दिग्दर्शित व प्रोडयुस की गइ आटपट प्रोडकशन के बेनर तले झी स्टुडियो और अेसेलझिन के लीये बनाई गई है. जो ६अप्रिल–२०१६ को रिलिझ की गई थी. उसने उसके पहले की फिल्म नटसम्राट का रिकोर्ड तोडा था.सैराट १०० करोड की आमदनी को पार करने वाली पहली मराठी फिल्म थी. आइ एम डी बी का १० में से ८ पोइंट ५ रेटिंग पाने वाली पहेली मराठी फिल्म थी. ;फिल्म की कहानी निम्नवर्ग के दलित युवान प्रशांत काले –पर्श्या और जमीनदार उन्नतवर्ग की लडकी अर्चना पाटील की कहानी है. पर्श्या गरीब होने के बावजूद उसका अच्छा एकडेमिक रेकर्ड है और स्थानिक क्रिकेट टीमका स्टार प्लेयर और कप्तान है. आर्ची दृढ निश्चय वाली अच्छा एकडेमिक रिकर्ड वाली लडकी है. किन्तु शिरफिरी और लडको जैसे कार्य जैसै ट्रेकटर चलाना,बुलेट चलाने की शैकीन है. दोनो कोलेज में साथ में पढते है और धीरे धीरे चुपके चुपके एक दूसरे के प्रति संवेदन की अनुभूति करते है. आर्ची का बडा भाई मान्या दोनो को एक दूसरे से दूर रहने की धमकी भी देता है.दोनो एक दूसरे के साथ समय बीताते है,और धीरे धीरे

प्यार में बंध जाते है. ;आर्ची के बदतमीज बडे भाइ के जन्मदिन की सेलीब्रेशन में आर्ची के परिवार को दोनो के प्यार का पता चल जाता है.राजकीय संपर्क वाले पिताजी पर्श्या और उनके दोस्त का पता लगाते है. कुछ रास्ता न मिलने पर आर्ची और पर्श्या भागकर शादी करने का प्रयास करते है.पुलिस द्वारा पकडे जाने के बाद दोनो को कस्टडी में लिया जाता है. आर्ची के पिताजी पर्श्या और उनके दोस्तो द्वारा आर्ची पर कीये गये गेंग रेप की झठी शिकायत दर्ज करवाने का प्रयास करते है.आर्ची को पता लगते ही आर्ची झुठी कम्पलेन रद करवाती है और पर्श्या और उनके दोस्तो रीहा कीया जाता है.जब आर्ची के पिताजी के गुन्डे द्वारा पर्श्या और उनके दोस्त को परेशान कीया जाता है तब दूरसे देखती हुई आर्ची बीच आकर पिताजी के आदमी के पास से बन्दूक खींचकर कहती है कि पर्श्या को छोडेंगे नही तो वह बंदूक चला देगी. तुरन्त ही दोनो भाग कर चलती ट्रेन पकड लेते है और छोटे से गांव की सीमा से पार हैद्राबाद चले जाते है. हैद्राबाद शहर में आर्ची और पर्श्या टूट कर तहास हो जाते है. उनके पास जीतना पैसा है उससे गुजारा करते है.होटल में रुम ढुंठने जाते है तो रुम मिलता ;४ ;नही. फ्रस्टेशन में रेलवे स्टेशन पर ही सो लेते है. एक दिन कुछ लोग आकर दोनो को पुलिस स्टेशन चलने को कहते है. रास्ते में उनमें से एक पशर्या को मारता है और दुसरा आर्ची पर रेप करने का प्रयास करता है.तभी पास वाले स्लम से/ बस्ती से सुमन अकका नामकी एक औरत आती है और दौनो को बचाती है. ;पर्श्या और आर्ची को अकका को खोली देती है. आर्ची को पास की बोटलींग कम्पनी में नोकरी दीलवाने मदद करती है और पर्श्या को उनके ढोसा स्तोल पर कूक का काम दे देती है.आर्ची अपने साथ करती पूजा से तेलुगु सीख लेती है. आर्ची और पर्श्या आपसी प्रेम से किफायती जिन्दगी जीते है. आर्ची को अपने घर की याद सताती है.एक बार तो पर्श्या को छोडकर ट्रेन में बैठकर घर भी जा रही थी तब ही अपना फैसला बदलकर पर्श्या के पास वापस आ जाती है. ईस बीच अकका और पूजा की साक्षी में दोनो रजिस्ट्रार आफिस जा कर शादी कर लेते है. साथ ही आर्ची को फिलम में प्रेगनन्ट दीखाते है. और कहानी को आखरी चोट दे ने फिल्म को दो साल आगे बढया जाता है –स्पीन ओफ कीया जाता है. ;आर्ची और पर्श्या अच्छी जगा पर अच्छे से रहते है. नया खरिदने वाला फलेट देखने गई आर्ची अपनी मा को फोन करती है और अपने बच्चे से बात करवाती है. फोन की बात के कुछ दिन बाद आर्ची का भाई और आर्ची के कुछ रिश्तेदार आर्ची के घर आते है.मा ने दी हुइ गिफट ले कर आये है. आर्ची का छोटा सा बेटा आकाश अपने पडोशी के साथ बहार गया है आर्ची अपने भाइ और रिश्तेदारो के लिये चाय बनाती है, पर्श्या भी आ जाता है. ;बच्चा पडोशन के साथ वापस आता है, बच्चे को घर के दरवाजे पर छोड दीया जाता है.दरवाजा खुला है, बच्चा घर में प्रवेश करता है और देखता है कि उनके माता पिता को बुरी तरह मारा दीया गया था. यहा भी दलित लडके को ऊंचे वर्ग की– पाटील लडकी से शादी करने कारण दलित लडके और पाटील लडकी को मार दीया जाता जाता है.खून लथबथ पडा है.छोटा सा लडका ओनर कीलींग की कुरुपता देखकर परेशान हो जाता है और खुन वाले पैर लेकर बहार नीकलता है. यही–खून से लदा ही भविष्य है.यहा फिल्म पूर्ण होती है. ;सद्गति दलितो की दयनीय स्थिति का आलेखन किया है. सत्यजीत राय जी सद्गति फिल्म में दुखी पंडितो द्वारा अस्पृश्यता का भोग बनता हैं. ठाकुरो के पास खटिया मांगने से लेकर सीधा–भरपुर दान देना हैं–पर उसने खुदके हाथसे नही–स्पर्श करने का अधिकार नही.यहां अस्पृश्यता का रुप देखने को मिलता है.बीडी के लिए अग्नि मांगते समय भी अपमान सहन करना पडा हैं. दोपहर का खाना भी मिलता नहीं और तुच्छ शब्दो सुनने पडते है. फिर भूखे तरसे रहकर लकडे की गाँठ तोडने मे खुदका जीवन खो देता हैं. तब मुर्दे को पंडित के हाथ से पशुवत धसिटकर गाँव के बाहर छोड दीया जाता हैं. यही सदगति है.यहा लकडे की गांठ प्रतीक बनकर आती है.यह गांठ दलितता का प्रतीक है.इसे तोडते तोडते जैसे दुखी अपनी जान देता वैसे आज तक कितनो ने जान दी है.यहा झकस्टापोझीसन भी है– दुखी भूखा प्यासा है और पंडित भर पेट खाना खाकर सो गया है.वैसे ही केतन महेता ने भी दलित जीवन की संवेदना को फिल्म में उतारा है.दलितो के पहेरवेश–पीछे जाडू लगाना, आगे मटकी लगाना से ले कर के सवर्ण के कुए का पानी तक नही ले शकते.और भोग लेना वह भी दलित का.इसी तरह मराठी फिल्मे भी दलितो की दारुण दयनीय स्थिति को आलेखित करती है. सैराट फिल्म में सवर्ण लडकी दलित लडके से शादी करती है तो मौत के घाट उतार दी जाती है. ;तीनो ही फिल्मो के अंत देखे तो, तीनो ही डिरेकटर्स की कलात्मकता का परिचय होता है. फिल्म कला के आयाम यहा देखने मिलते है.

सदगति में लकडे की गांठ तोडते तोडते मरता दुखी दलित्व का रुपक बन कर आता है तो साथ ही साथ एक नयी समस्या खडी करता है–इस लाश को कौन उठायेगा; गौंड के कहने से लाश उठाने कोई आता नही है.चमारवास में पंडित चमारो को बुलाने जाते है तब पंडित को अनसुना करते है.यह प्रत्यक्ष पहला प्रतिरोध है.सन १९३० में लिखी कहानी में ऐसा प्रतिरोध प्रत्यक्ष दिखाना बडा काम था.कोइ चमार सुनता नही है तब पंडित ब्राहमन वास में वापस आ जाते है.दुखी की पत्नी झूरिया रोती हुइ दुखी की लाश के पास आकर विलाप करती है उस के बेक ग्राउन्ड– उसके पीछे गायो का टोला दीखाया है– यहा सत्यजीत राय जी की कला का परिचय मिलता है.गायो के टोले के साथ झरिया को जकस्टापोझ करते है.ब्राहमनवास में सड रही दुखी की लाश को अन्य ब्राहमनो की ;५ ;शिकायत से खुद ही लाश को खींचता हुआ गाव के बाहर ले जाता है.संध्याकाल के ढलते सूरज का अंधकार का प्रकाश आयोजन और लाश को खींचता पंडित के साथ फिल्म को समाप्त कर के सत्यजीत राय ने अंत को कलात्मक स्पर्श दीया है. सत्यजीत राय को लाउड बन जानना होता तो मूल कहानी में लाश को गीध,कौए नोंच दीखाया है वैसा दीखा सकते थे,और दलितो की स्थिति दीखा सकते थे पर यह फिल्म १९८७ में बनी है संकुलता का काफी कुछ अवकाश है इस लिए कुछ न बताकर भी,ऐसी लालच से बचकर संयम रखकर लाउड होने से बचे है. ;नेरेटर द्वारा सुनाती –दलित उत्पीडन– की कथा भव नी भवाइ का अंत भी केतन महेता कलात्मक निरुपित करता है.नियती हो या येनकेन प्रकार से दलितो का भोग लिया ही जाता है.भव नी भवाइ में राजा को निसंतान रुप से मुकित पाने के उपाय के लिए वावडी–वीरडी–कुआँ– बना ने का प्रकल्प है.इस वाव बन तो जाती है लैकिन पानी मिलता नही है. पानी मिले इसे बत्तीस लक्षण वाले का भोग देना जरुरी है.यह भोग के लिए दलित जीवो ही योग्य व्यकित है. जीवा का भोग लेना एक आयरनी है. राजा की संतान प्राप्ति के लिए जाने अन्जाने राजा के संतान का भोग लीया जाय जैसी स्थिति निर्माण होती है.वृद्ध द्वारा सुनाइ जाती कहानी में जीवा का भोग लेने के बाद पानी मिल जाता है.जब की यहां ब्रेखत की एलियेनेशन की तकनिक का प्रयोग देख ने मिलता है.एक युवान वृद्ध की कहानी को बीच में ही रोक कर वास्तविक अंत बता ने कहता है.इस तरह पटकथा को एक नया अंत दीया जाता है– जीसमे वाव में आते ही राजा डूब जाता है.स्वतंत्रता के लिए– दलितो की अस्पृ;यता निवारण के लिए होते संघर्ष के समान्तर दिग्दर्शक स्वतंत्रता संग्राम के रकतरंजित दृ;य रखे है.जैसे भारत की स्वतंत्रता का संग्राम खून से भरा था इसी तरह दलितो का स्वतंत्रता संग्राम भी खून से भरा है.हरिजनो के लिए गांधी विचार – अस्पृ;यता निवारण के विचार से भिन्न रकतरंजित वास्तव में देखने मिलता है. दूसरी ओर यह भी निर्देश होता है की अभी तक संपूर्ण स्वतंत्रता मिली नही है. अभी भी और खून बहना बाकी है.आखरी दृ;य में गाँव से शहर की ओर आते है, गाँव की कुंठा से दूर.शहर के कारखाने के दृ;य परदे पर दिखाई देते है.यह आधुनिकता ही इस दलितता से स्वतंत्रता दीला सकती है.लैकिन अभी की स्थिति में एक नई दीशा का ध्रुवीकरण हो रहा है. ;सैराट फिल्म में अंत को ज्यादा कलात्मक बनाया है. गाँव की दलित शोषित संकुचितता छोडकर हैदराबाद जैसे मेट्रो सिटी में आये नायक नायिका–आर्ची और पर्श्या नये तरह के शोषण का भोग बनते है और फिल्म को नई दिशा देते है.डीटरमिनेशन आव कास्ट से डिटरमिनेशन आव जेन्डर की ओर गइ फिल्म,नायिका पर रेप के प्रयास को दर्शाकर जातीयता के शोषण और नगरीय भूख का निरुपण करती है. फिल्म है इस लिए दिग्दर्शक को यह अंत ना काफी लगता है इस लिए अचानक सा और प्रतीकात्मक अंत फिल्माया है.प्रेक्षागार के भावको को आघात देने नायक नयिका –सेट– हो गये है और अपने लिए घर देखने जाते है– अपना घर बनाने की भावना है तभी फिल्म को एक नये अंत की ओर ले जाते है– तभी नायिका अपनी माँ को कोल करती है.इसी कोल के कारण कुछ दिन बाद नायिका का भाई और उसके कुछ पडोशी घर पर आते है.उनका बेटा पडोशी के साथ बाहर गया है.तभी नायक भी घर मे आता है.दोनो आये महेमानो के लिए खुशी खुशी चाय बनाते है.भाई माता ने दी गिफट नायिका को देता है.अब केमेरा पडोशी के साथ घूमने गये बच्चे पर है.बच्चा मा–बाप को ढुंढता घर में प्रवेश करता है.बालक, माता–पिता को खून से लथबथ देख कर बदहवास बनता है.जमीन पर गीरे खून के साथ केमेरे की आंखो से भयानकता को स्क्रीन पर निरुपित की है, एक भी शब्द के बिना, समाज की भयानकता को सिर्फ और सिर्फ केमेरे की कला से आलेखित किया है.खून से सना बालक– खून वाले पैर लेकर बाहर नीकलता है, सिर्फ खून वाले पैरो की छाप दीखती है. यहा दीग्दर्शक फिल्म को सिमबोलाइज्ड करते है. खून से तर पैरो के

निशान लेकर बच्चा आगे बढता है, जो इस दलितता के कारण ब्लडेड फयुचर व्यंजित करता है.यहाँ निहलानी कृत तमस फिल्म का अंत स्मरित होता है.तमस फिल्म में अंत में बच्चे का जन्म होता है, तब,अल्ला हो अकबर और हर हर महादेव के नारे गूंजते सुनाई देते है– जो भारत के भविष्य को भी व्यंजित करते है.यह तीनो फिल्मो के अंत दिग्दर्शक के कसब को कसोटी पर रखता है.तीनो सर्जक अपनी अपनी तरह सफल रहते है. ;६ ;तीनो फिल्मो का अभ्यास करते है तो इतना तो स्पष्ट होता ही है, कि दलितो का शोषण, अस्पृ;यता, उनका लाभ उठाना, गाँव की संकुचितता और यह सभी में भोग बनते दलितो का निरुपण, हांसिए के समाज को हिन्दी और अन्य भारतीय भाषा की फिल्मो में निरुपित किया है.दलितो के जीवन को खून से भरा अस्पृ;यता दानव निगल जाता है .इन सभी में, उनका रकत रंजीत भविष्य भी कलात्मक तरीके से आकलित हुआ है.

संदर्भः ;

१. प्रतिबद्ध, भरत महेता, प्रका.खुद, प्रआ. २००५ ;
२. Filming fiction, m.saduddin, oxford university press, 2012
३. दलित वृतांत, दिनु भद्रेसरिया, गुज.दलित सा. एकादमी, जान्यु–२०१२ ;
४. दलित चेतना केन्द्रीत हिन्दी गुज.उपन्यास, डा;. गिरीशकुमार रोहित, प्रका.खुद , २०१२ ;
५. दलित साहित्य आंदोलन, अनु.डो.आर.एम.वणकर,गुज.दो.आर.एम.वणकर, गुज.द.सा. अकादमी,२०१२
६. सर्व श्रेष्ठ कहांनियां, सं.डो. मायाप्रकाश पांडेय, शील प्रकाशन, आणंद, प्र.आ.–२००५

डॉ. हितेश एन. गांधी,
रत्नसिंहजी महिडा कॉलेज, राजपीपला, जि नर्मदा,गुजरात.